

**Loans Granted by Nationalised Banks  
to Engineering and medical Graduates**

6833. SHRIMATI BHARGAVI THAKKAR : Will the Minister of FINANCE be pleased to state :

(a) the number of Engineering and Medical Graduates, who applied for loans from the nationalised banks since nationalisation in Kerala; and

(b) the number of the applicants who were granted loans and the amount of loan granted ?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN) :

(a) and (b). For the purpose of compiling data regarding advances, 'Engineering and Medical Graduates' are not treated as a separate category; they get covered, depending upon the nature of the projects, either under 'small-scale industries' or under 'professionals and self-employed persons'. The number of borrowal accounts and the amounts outstanding in regards to these two categories in Kerala state as at the end of December 1971 was as follows :

Category	No. of borrowal accounts	Amount Outstanding (Rs. in lakhs)
1. Small Scale industries	3797	1331.86
2. Professionals & self-em- ployed persons	4442	51.56

12.10 hrs.

**CALLING ATTENTION TO MATTER  
OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE**

**REPORTED CIA ACTIVITIES IN THE  
BORDER DISTRICTS OF RAJASTHAN BY  
AMERICAN RESEARCH SCHOLARS**

श्री जयलाल राव जोशी (साजपुर) :  
श्रीमान् महोदय, मैं अविसम्भवीय लोक

महत्त्व के निम्नलिखित विषय की ओर यह कार्य मंत्री का ध्यान दिलाता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि वह इस बारे में एक बक्तव्य दे :

"संयुक्त राज्य अमेरिका के विदेश विभाग और रक्षा मंत्रालय में पाकिस्तान डेस्क से सम्बन्धित श्री रिचर्ड एन० ब्ल्यू और श्री डेरल ए० फ्रोह्रिब द्वारा, जो राजस्थान विश्वविद्यालय में शोध कार्य कर रहे हैं, बीकानेर, गंगानगर सीमांत जिले में की जा रही सी० आई० ए० की गतिविधियों के समाचार"

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI K. C. PANT) : Of the two individuals mentioned, Dr. Darrel A Frohrib has not been granted any visa nor is there any information of his having visited the country. Mr. Richard Newton Blue was granted visa valid for 10 months' stay in India up to 20th July, 1972 for undertaking research on some aspects of agricultural administration (with special reference to Rajasthan). He was staying at Jaipur and is known to have visited Bikaner in November 1971 for sight-seeing. There is no information of his having visited Ganganagar District. Nothing adverse has come to the notice of Government with regard to his activities.

श्री जयलाल राव जोशी : अध्यक्ष महोदय, गृह कार्य मंत्री का बक्तव्य पढ़ कर मुझे बड़ा दुःख हुआ है। पिछले दो दिनों में राजस्थान की विधान सभा में इसके विषय में बहुत हल्ला मचा है और कई पहलू सामने आये हैं। इस स्थिति में यह बक्तव्य बहुत नुस्खेबाजी और भ्रमसाधक है।

जहाँ तक सी० आई० ए० की एक्टिविटीज का सम्बन्ध है, के केनल असीमियत में

[श्री जगन्नाथ राव जोशी]

हैं, ऐसी बात नहीं है। वे दुनिया भर में चलती हैं। उसका जाल कितना प्रभावी होता है, इसके भी कई उदाहरण सामने आये हैं। इससे पूर्व भी इस भाष्य के समाचार मिलते रहे हैं कि अपने देश में भी इनकी एक्टिविटीज चलती है। दो साल पूर्व राज्य सभा में एक सवाल का जवाब देते हुए उस समय के गृह-कार्य मंत्री, श्री अब्दुल्ला ने स्वीकार किया था कि एशिया फाउंडेशन की अमरीका के खुफिया विभाग से बन मिलता है, यह पता लगने के बाद हमने उस के खिलाफ कार्यवाही की है। इतना ही नहीं, इस साल 13 अप्रैल को राज्य सभा में एक सवाल का जवाब देते हुए श्री सुरेन्द्रपाल सिंह ने कहा कि जो व्यक्ति अमरीकी जासूसी करते हुए पकड़ा गया, उसके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। वास्तव में दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है, किन्तु लगता है कि इस सरकार की भावत दूध से जलने के बाद भी छाछ को उबाल कर पीने की है।

नामार्जब ने भी सी० आई० ए० की एक्टिविटीज चलती हैं। डाका के पतन के बाद दो तीन व्यक्ति प्रशिक्षण पाते हुए पकड़े गये थे। उसके विषय में उस के "प्राबदा" ने लिखा कि इसमें सी० आई० ए० का हाथ है। हमारे देश में जो कुछ होता है, उसकी जानकारी दूसरों को है। लेकिन पृष्ठ पर हमें बताया जाता है कि एक व्यक्ति को बीसा मिला था और दूसरे को नहीं मिला। इन दोनों सरजनों को लेकर इतना ईगामा हुआ। क्या राजस्थान के मुख्यमंत्री को मालूम नहीं है कि वह जयपुर में हैं ही नहीं? या क्या प्राक्सिस्तानियों की तरह अमरीकी श्री हिन्दुस्तान में बिना बीस के रहने लगे

हैं? मंत्री महोदय के वक्तव्य में कहा गया है :

"He visited Bikaner in November 1971 for sight seeing."

इस बारे में राजस्थान के मुख्यमंत्री कहते हैं :

Mr. Khan said he knew there were CIA agents in the University.

राजस्थान के मुख्य मंत्री ने यह भी कहा है :

The Chief Minister Said Mr. Blue wrote several letters to the Chief Secretary, Rajasthan seeking approval of his project or seeking a letter of introduction to visit some of the areas. But the Chief Secretary refused to do so till the Union Government cleared the project.

राजस्थान के मुख्य मंत्री को भी पता नहीं कि केन्द्र ने उसको क्लियरेंस दे दी है। आये चलकर वह कहते हैं :

He would write to the Union Government that in future it should not approve any project for research without consulting the State Government.

मंत्री महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा है कि श्री ब्लू साइट-सीईंग के लिये गये हैं। किन्तु राजस्थान के मुख्यमंत्री कहते हैं :

The American visited Kota and Bikaner for certain research work and met certain officers including the District Collector.

क्या यह साइट-सीईंग है? उन्होंने खुले धीर पर कहा है कि वह डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर को मिले।

अधेरीकंग पीस कीर में श्री सोलह व्यक्ति काम करते हैं, श्री ब्लू उनके प्रमुख के रूप में काम करता है। अब बीस

आदमियों की गतिविधियों के बारे में पुलिस की रिपोर्ट की मांग की गई है और कहा गया है कि वह रिपोर्ट एडवर्स है। जब उनकी गतिविधियों के बारे में ऐसे आरोप लगाये गये हैं, तो मंत्री महोदय तत्सम्बन्धी फाइल को देख ले।

मि० ब्लू और मि० फोहरिब की जो शिक्षा हुई है, उसका एग्जीक्यूटिव या सिव्वाई से कोई सम्बन्ध नहीं है। कम से कम सरकार को उनके एन्टेसिडेन्ट्स को देखने की कोशिश करनी चाहिए। उन्होंने गंगा-नगर और बीकानेर की सिव्वाई-व्यवस्था, कौनाल, बड़े-बड़े रेत के टीलों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी और नक्शे बनाकर भेजे हैं। जब राजस्थान विधान सभा में दो दिन तक हंगामा हुआ और अखबारों में खबरें छपीं, तो अगर मंत्री महोदय की ओर से पूरा वक्तव्य दिया जाता, तो हम पूरी बात को समझ सकते। लेकिन मुझे दुख है कि ऐसा नहीं किया गया है। एसेम्बली में जो सवाल उठाये गये, उनका कोई जवाब नहीं दिया गया है।

क्या वह दूसरे सज्जन, मि० फोहरिब, यहाँ है? राजस्थान के मुख्य मंत्री ने कहा है कि उन्हें मालूम नहीं है कि केन्द्र ने उसको क्लियरेंस दिया है या नहीं। क्या यह बात सही है? क्या मंत्री महोदय इस बात की जानकारी लेने के लिये तैयार हैं कि पुलिस की रिपोर्ट एडवर्स है? क्या मंत्री महोदय को इस बात की जानकारी है या नहीं कि अमरीका के डिफेंस विभाग में पाकिस्तानी डेस्क पर काम करने वाले सज्जन यहाँ भेजे हुए हैं? क्या वह इस बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करेंगे और उसके खिलाफ एक्शन लेंगे या नहीं? इस बारे में पूरी जानकारी होना बहुत आवश्यक है।

दुनिया भर में खुफिया विभागों की गतिविधियाँ छद्म रूप में चलती हैं। जब खूबश्वेव और बुलगानिन इंग्लैंड गये, तो उनका जहाज बन्दरगाह में खड़ा था। बाद में पता चला कि इंग्लैंड का एक फ़ागमैन मिसिंग था। तेरी भी चुप, मेरी भी चुप के अनुसार इंग्लैंड हम बारे में नहीं बोल सकता था। तीन साल बाद यह जाहिर किया गया कि वह फ़ागमैन रूसियों के पास है। सीमावर्ती प्रदेशों में जासूस मिशनरियों के रूप में आते हैं। जहाँ तक नागा लैंड का सवाल है, वहाँ मिशनरियों के द्वारा जासूसी का काम बहुत अच्छा हो सकता है। प्रोफेसरो और रिसर्च स्कालरो के रूप में जासूसों को भेजा जाता है।

मेरा आग्रह है कि जो बातें मैंने उठाई हैं, मंत्री महोदय उनका पूरा जवाब दें। भविष्य में ऐसी बातें न हों, इस बारे में सतर्क रहकर ठोस कदम उठाये जाएँ। यद्यपि इस बात का इस प्रश्न से सम्बन्ध नहीं है, लेकिन हमने देखा कि जब 3 दिसम्बर, 1971 को शाम के समय हमारे देश पर हमला हुआ, तो हमको उसका पता भी नहीं था। दूसरे देशों की इन्टेलिजेंस को समझने के लिये हमारे पास सुपर इन्टेलिजेंस होनी चाहिए। इसके बलाभा कोई और चारा नहीं है। हमको पूरी जानकारी होनी चाहिए।

राजस्थान में घाने के बाद उनको वीसा मिला या नहीं, उनके एन्टेसिडेन्ट्स क्या हैं, वे क्या करते हैं, इस बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करके मंत्री महोदय एक विस्तृत वक्तव्य सभा-पटल पर रखें।

जहाँ तक इकबाल नारायण का सम्बन्ध है, यह जानकारी मिली है कि अखिल में वह मुसलमान है। हिन्दू या मुसलमान का

[श्री जगन्नाथ राव जोशी]

सवाल नहीं है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अपना नाम छिपाने की कोशिश करता है, तो जरूर उसके पीछे कुछ होगा। उदयपुर यूनिवर्सिटी में एक क्लबा है। उसके खिलाफ भी कुछ ऐसी कार्रवाही हुई है। राजस्थान की यूनिवर्सिटी में ऐसी बातें हो और स्वयं मुख्यमंत्री इसकी गवाही दें, तो इस स्थिति में केन्द्र को इस तरफ पूरा ध्यान देना चाहिए और पूरी निगरानी रखनी चाहिए।

श्री बिक्रम महाजन (कागडा) : और कुछ किताबें जेम्स बाट की भी पढ़नी चाहिए।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त : अध्यक्ष महोदय, जहाँ भी विदेशों की ओर से इन्टेलिजेंस का खतरा होता है, चाहे वह सी० आई० ए० द्वारा हो और चाहे किसी दूसरी इन्टेलिजेंस एजेंसी द्वारा, वहाँ निगरानी रखी जाती है और रखी जायेगी। माननीय सदस्य ने सुपर-इन्टेलिजेंस की बात कही है। शब्द "काउंटर-इन्टेलिजेंस" है—इन्टेलिजेंस और काउंटर इन्टेलिजेंस।

श्री जगन्नाथ राव जोशी : "सुपर" से मेरा मतलब ज्यादा अच्छी क्वालिटी से है।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त : काउंटर इन्टेलिजेंस का काम भी चलता है। माननीय सदस्य यह बात मानेंगे कि इन सब बातों पर सदन में धीरे से बहस नहीं हो सकती है। लेकिन इस बारे में निगरानी जरूर रखी जाती है।

माननीय सदस्य ने एक सवाल पूछा है कि क्या राजस्थान के मुख्यमंत्री यह नहीं जानते कि इनमें से एक प्रोफेसर, जिनकी अपनी ख्वाहिशें भी की गई हैं, यानी जो डेरल

ए० फोहरिब, राजस्थान में है या नहीं। राजस्थान के मुख्य मंत्री ने भी वही वक्तव्य दिया है, जो मैंने यहां दिया है कि वह राजस्थान में नहीं हैं, वह देश में नहीं आये हैं, उनको बीसा नहीं दिया गया। मैं नहीं जानता कि इसके बाद भी माननीय सदस्य ने यह सवाल क्यों पूछा। राजस्थान के मुख्य मंत्री ने कल अपने बयान में यह कहा है—यह टाइम्स आफ इंडिया में है

Mr. Richard N Blue and Mr. Darrel Frohrib are engaged in a joint research project with two Indian professors. The project has not yet been cleared by the Union Government. Mr. Blue is engaged in another research project

अब जैसा मैंने बताया यह साहब जो है फोह्रिब इनको न बिजा दिया गया न यह हिन्दुस्तान में है, न जिस प्रोजेक्ट में यह काम करने वाले थे उसको क्लीअरेंस दी गई, इसलिए यह प्रश्न ही नहीं उठता और डा० इबबाल नारायण जो लगता है कि आपके सारे स्पेकुलेशन के आधार हैं क्योंकि यह मुसलमान है, तो इनका इस प्रोजेक्ट से कोई सम्बन्ध नहीं है जो मि० ब्लू का प्रोजेक्ट है। दूसरे प्रोजेक्ट के साथ बा जिसको कि एलाऊ नहीं किया गया। इसलिये इसमें कोई आधार नहीं है।

अब आपने यह पूछा कि राजस्थान गवर्नमेंट से पूछना चाहिए था। तो राजस्थान गवर्नमेंट से पूछा गया। राजस्थान गवर्नमेंट से जिस वक्त बिजा देने की बात आई उस वक्त भी पूछा गया और जो प्रोजेक्ट था उसके सम्बन्ध में भी डेवलपमेंट कमिशनर राजस्थान से पूछा गया। इसलिए ऐसी बात नहीं है कि राजस्थान गवर्नमेंट से पूछा नहीं गया।

फिर आपने कहा कि स्टेट पुलिस ने एडवर्स रिपोर्ट इस प्रोफेसर के बारे में दी

है। कल जो राजस्थान की होम मिनिस्ट्री के स्टेट मिनिस्टर ने बक्तव्य दिया है जिसकी रिपोर्ट डाइरेक्ट आफ इण्डिया में है, वह इस प्रकार है।

"Government had till now no information that Prof. Blue was engaged in any activity that would endanger the security of the country "

तो मैं नहीं जानता कि यह ऐडवर्स रिपोर्ट की बात आपको कहा से पता चली? यह तो वहा की प्रेसम्बली का अधिकृत बक्तव्य है जिसकी रिपोर्ट मैं आपके सामने दे रहा हूँ।

साइट-सीडग की बात आपने कही। साइट-सीडग के लिये कोई जाता है तो मैं क्या कर सकता हूँ? आप कहते हैं कि साइट-सीडग के लिये गये। आप कहते हैं कि डी० एम० से क्यों मिले और पीस कोर वालो से क्यों मिले? अब जितनी सूचना मिली है राजस्थान सरकार से या अपने सूत्रो से वह यह है कि किसी भी देश विरोधी कार्य की सूचना इनके बारे में नहीं है। कोई भी देश-विरोधी चीज उन्होंने नहीं की।

कुछ मन्दिरों में शायद गये। तो उसमें तो आपको एतराज नहीं होना चाहिए।  
... (अवधान) ...

यह आपने पूछा कि डिफेंस डिपार्टमेंट के है तो वही डिफेंस डिपार्टमेंट का जिक्र उन्होंने अपने ब्रायो-डेटा में किया है, वह यहाँ नहीं आये। यह प्रोफेसर ब्लू नहीं है, प्रोफेसर फोरिब है जो यहाँ आए ही नहीं।

श्री सरजू पन्डित (गाजीपुर) : कई बार यहाँ सी० आई० ए० की एक्टिविटीज के बारे में प्रश्न आते रहते हैं और काफी

नादाद में हमारे देश में ये काम कर रहे हैं। कानपुर के एक प्रोफेसर के बारे में भी कहा गया था जो आई० आई० टी० के है कि वह भी इस तरह की एक्टिविटीज में हिस्सा लेते हैं। उसके बारे में आपने अपने बक्तव्य में कुछ नहीं कहा। मंत्रियों ने इनका भी आरोप यहाँ लगाया था। मंत्री जी का कहना है कि हमारा काउंटर इंटेलिजेंस भी काम करता है। मैं जानना चाहता हूँ कि मारी एक्टिविटीज जो हो रही है उसके बारे में सरकार क्या कर रही है? अभी मुझे पता चला कि इलाहाबाद में एक रुद्र यज्ञ हो रहा है। उसमें भी सी० आई० ए० के लोग इनवाल्ड है। नैनीताल में हजारों गो० आई० ए० के लोग इन्स्टीट्यूशन में, म्यूजो और कालेजो में तथा दूसरी जगहों में काम कर रहे हैं। आनन्द मार्ग का मामला आपके सामने आया। मैं जानना चाहता हूँ कि आखिर आपका इंटेलिजेंस कहाँ संया रहता है। अलबत्ता में बात आ जाती है। दूसरे लोगों को मालूम हो जाता है। लेकिन हमारी सरकार को इसके बारे में कोई पता नहीं रहता। दूसरा मेरा सवाल है कि कानपुर के प्रोफेसर के बारे में जो आरोप लगाया गया है उसके बारे में सरकार की जानकारी क्या है और सी० आई० ए० की एक्टिविटीज को कब करने के लिये कौन से ठोस कदम सरकार ने उठाये हैं, इसकी ठीक जानकारी देश को दें।

श्री कृष्ण चन्द्र पन्ना : मैंने बताया कि कानपुर के प्रोफेसर जो ये और जो राजस्थान के प्रोफेसर ये ये दोनों मिलकर दो अमरीकन प्रोफेसरों के साथ एक रिसर्च प्रोजेक्ट में काम करने वाले थे। उनके लिये अनुमति मांगी गई और वह अनुमति नहीं दी गई। इसलिये वह प्रोजेक्ट आज चालू नहीं है। इसलिए उसका कोई सवाल नहीं उठता।

[श्री कृष्ण चन्द्र पन्त]

जहाँ तक नैनीताल में सी० धाई० ए० के एजेण्ट्स का सवाल है मुझे तो उसकी कोई जानकारी नहीं है। चूँकि आपने नैनीताल का नाम लिया और मेरा वह निर्वाचन क्षेत्र भी है तो अगर आपको जानकारी हो तो मुझे दे दें, लेकिन मुझे ऐसी कोई सूचना नहीं है कि हजारों एजेण्ट्स वहाँ घूमते हैं।

अब सी० धाई० ए० की रोकथाम के बारे में एक मिशन तो अभी दी जोशी जी ने कि एशिया फाउंडेशन को रोका गया और उसके अलावा निगरानी तो हम रखते हैं। कोई प्रोफेसर्स आएँ तो उसमें भी निगरानी रखते हैं। जब उनकी बीसा एप्लीकेशन की स्कूटनी होती है उस वक़्त भी सम्बन्धित सब मंत्रालयों से पूछते हैं और जो कुछ अपनी सूचना है उसको देखते हुए विदेश मंत्रालय से भी पूछा जाता है। उसके अलावा और भी जितने सम्बन्धित मंत्रालय हैं उनसे पूछा जाता है। इस सबके ऊपर काफ़ी निगरानी के बाद बोला दिया जाता है। जो प्रोजेक्ट होते हैं उनको भी स्कूट-नाइज किया जाता है। गाइड लाइन भी बनाने की बात है कि किस तरह के प्रोजेक्ट्स को एसाऊ करना चाहिए। इसलिये इस पर पूरी निगरानी रखी जाती है।

श्री कमलनिधि मजुमदार (केसरिया) :  
सी० धाई० ए० अमरीकन साम्राज्यवाद का ऐसा एक अंग जो समूची दुनिया में अमरीकी साम्राज्यवाद की रक्षा करने के लिए काम करता है और जो भी आजादी पसन्द ताकतें हैं उनको दबाने के लिये कार्रवाई करता है। वह चाहे घाना में हो, चाहे बिस्ली हो, चाहे भारत हो। इस संदर्भ में इस बात को समझना चाहिये। राजस्थान की जो घटना है वह एक बोर्डर स्टेट की

घटना है और यह कोई ऐसी घटना नहीं है कि जो केवल राजस्थान में हो रही हो बल्कि समूचे देश में ऐसी घटनाएँ हो रही हैं कि सी० धाई० ए० के एजेण्ट तमाम देश में फँसे हुए हैं और माननीय सदस्य ने इस बात का जिक्र किया है कि कैसे शिक्षण संस्थाओं में युवकों के अन्दर, विद्यार्थियों के अन्दर, अखबार वालों के साथ और विभिन्न धार्मिक संस्थाओं से प्रवेश करके ये अपना क्रिया कलाप चलाते हैं। यह भी आपको मालूम हुआ होगा कि काशी विश्वविद्यालय से सी० धाई० ए० के दो प्रोजेक्ट चल रहे थे जिसके विषय में अभी जो नई काउंसिल बनी है उसको मालूम हुआ है और उस पर एकशन लिया गया है। बाइस चांसलर को पहले मालूम नहीं था। इसी तरीके से आनन्द मार्ग की घटना बिहार में हो रही है। वह आप जानते ही हैं। तो इतनी बड़ी घटनाएँ हो रही हैं और जबकि आपका भी एक अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ कुछ हो रहा है अपने कम्पल्शन से या जिस भी कारण से तो ऐसी स्थिति में सी० धाई० ए० के क्रियाकलापों के बारे में आपको और अधिक सावधान रहने की ज़रूरत है। जैसा बयान आपने दिया है वह बहुत संक्षिप्त है जिसमें बातों की सफाई नहीं हुई है। इसलिये मैं जानना चाहता हूँ कि राजस्थान के मुख्य मंत्री ने जो अपने बयान में कुछ आदेश जैसा दिया है कि ऐसे सरकारी अफसरों को जो कोई भी ऐसे कार्यकर्ता हों उनको सूचना देने का अधिकार नहीं होगा जब तक कि प्रायर धार्डर उनको नहीं मिले या ऐसे शोध कार्यों को जो केन्द्र चलाना चाहें तो राज्य सरकार से राय करनी पड़ेगी, ऐसा कुछ आदेश दिया है सरकारी अधिकारियों को अपनी इनफार्मेशन उन कार्यकर्ताओं को देने के बारे में, ऐसी कार्रवाई का आप समर्थन करने जा रहे हैं या नहीं और ऐसी

कारंबाहियों के लिये तमाम राज्य सरकारों को धावेष्ट देने जा रहे हैं या नहीं कि तमाम सरकारी अधिकारी सी० आई० ए० की एक्टिविटीज में लगे हुए लोगों के साथ किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखें और जो रखें उनके ऊपर कानूनी कारंबाई की जाए, उनको ऐसे पदों से हटा दिया जाए और ऐसे लोगों को किसी प्रकार का प्रोत्साहन न दिया जाए। साथ साथ इसको भी आपने सोचा है या नहीं कि सी० आई० ए० की एक्टिविटीज को जिसमें टेलीफोन कम्युनिकेशन जितना हो रहा है उसका भी सम्बन्ध है, बैंक कम्पनी के साथ आपका एग्जिमेंट है और वह इस साल सत्य होने जा रहा है, तो उसको आप फिर आगे के लिये बालू करेंगे या नहीं, इसके बारे में आपने सोचा है या नहीं? आई० टी० टी० का सम्बन्ध बैंक कम्पनी से है और घाना में जो घटनाएं हुई हैं वह आंस खोलने वाली हैं, तो मैं जानना चाहूंगा कि यह जो आई० टी० टी० के साथ बैंक कम्पनी का सम्बन्ध है और हिन्दुस्तान से उसका एग्जिमेंट है उस एग्जिमेंट के समाप्त होने के बाद फिर आगे के लिये उसको आप बालू कीजिएगा या नहीं कीजिएगा? ऐसी तमाम कार्यवाहियों को जिसके जरिये सी० आई० ए० की एक्टिविटीज का विस्तार होता है रोकने के लिये कोई कामग्रीहंसिब बिल लाकर ऐसा कानून क्या आप बनाने जा रहे हैं जिसके जरिये इसको रोका जा सके या यह सम्भवे है कि जो कानून है वही पर्याप्त है और उसी से यह एक्टिविटीज रोकी जा सकती है सी० आई० ए० की? इस बात का स्पष्टीकरण आप कीजिए।

श्री कुञ्जल चन्द्र वर्मा : अध्यक्ष महोदय, मैं समझ नहीं कि यह जो हमारे सामने सवाल पेश है उस के ऊपर तो कोई सवाल

पूछा नहीं उन्होंने, एक जनरल बात पूछी है और मैंने कहा कि सी० आई० ए० हो या दूसरी कोई एजेंसी हो उसके ऊपर हम निर्बिरानी रखते हैं। इन्होंने कहा कि राजस्थान की घटना जैसी घटनाएं सारे देश में हो रही हैं तो राजस्थान में तो कोई घटना हो ही नहीं रही है। यही तो मैंने आपको बताया। अब आप उसमें कुछ देखना चाहें जो नहीं हो रहा है तो मैं उसके लिए क्या कहूँ? बिहार की जो घटना बताई या दूसरी जगहों के बारे में बताया, उस बारे में मेरे पास कोई सूचना नहीं है। (अध्यक्षान) बैंक कम्पनी के एग्जिमेंट के बारे में भी मेरे पास कोई सूचना नहीं है। जहां तक सरकारी कर्मचारियों के सम्बन्ध में आपने कहा है, आप जानते हैं वे आफिशियल सीक्रेट एक्ट से बन्धे हुए हैं। चाहे किसी तरह की कोई गोपनीय सूचना हो, तो यह उन का फज है कि उन को सतर्क रहना चाहिये। यह नियम की बात है।

MR. SPEAKER: Trouble arises if States also start discussing such matters within the jurisdiction of Parliament and clash of views is there. It will not be there if they do not go out of their scope as they do sometimes. I am sorry, I cannot reflect on it. But there should be some sort of co-ordination. If the States do something and we give some other version, difficulty arises.

SHRI B. K. DASCHOWDHURY (Cooch-Bihar): It is the shortest statement given by the hon. Minister though the problem is very very large and it has got very wider implications. It is known to all that the Americans are having various types of secret organisations, not only the CIA, but the Federal Bureau of Investigation, the I. T. T. and various things. Those organisations and secret services conduct work even inside our country in the names of institutions or associations.

The hon. Minister has said that there is no evidence of any anti-national activities

[Shri B. K. Daschowdhury]

against the person concerned, particularly against Professor Blue. I should like to contradict the hon. Home Minister's statement and refer him to the statement given by the hon. Chief Minister of Rajasthan which is reported in the *Statesman*. Mr Khan said that he knew that there are CIA agents in the universities and in political parties who visited the United States on lecture tours and accepted huge amounts for those assignments. If it is a fact that there are CIA agents inside universities of Rajasthan and inside some of the political parties also, and other persons who have made tours of the United States allegedly on education tours or something like that and they had accepted huge sums, I would like to know from the hon. Minister what action has been taken? Am I to understand that the statement of the hon. Chief Minister of Rajasthan is not correct? If so, which one is true? Let the whole thing be cleared.

It is also not known on what understanding Professor Richard Blue was granted a visa for ten months for stay in India. I do not know on what basis he wanted to visit some other parts of the country, may be within Rajasthan. Is it not a fact that in the visas there are certain strict stipulations about the places to be visited in accordance with the purpose of the visa granted to any particular person. If so on what basis Mr. Blue wanted to visit certain other areas. It is said in the statement that he sought permission from the district officials to visit some other areas which are not directly connected with agricultural administration. What does the hon. Minister mean by agricultural administration? Is it agricultural research? Whatever that may be, was any proper enquiry conducted about the motivations or plans of Prof. Blue while he wanted to visit certain other areas?

Thirdly, as I said there are various other organisations under some cover for the CIA. I should like to know from the hon.

Minister whether from the report of the working of such organisations, the Home Ministry or the Finance Ministry or any other wing of the Government has got a list of all those associations, organisations, institutions, cultural and others, which are getting money from foreign countries and whether they are liable to render accounts to the Government. It is strange, a few days ago I submitted a question and it came up and the answer was laid on the Table, about a particular organisation in West Bengal, Cooch Behar, a foreign missionary working for several years together spending crores of rupees in the name of Cooch Behar Refugee Service and giving lumpsums of money to various persons and there by influencing the officials and the administration. In reply to this question whether the Government are aware of the source of money which this Cooch-Bihar Refugee Service are getting from foreign countries, the Government replied that they are not aware of any such thing. Then, how can he say that they are really, very much vigilant and watchful about this matter? I quite appreciate the Minister's statement that they are having not only super-intelligence but counter-intelligence but to what extent have they succeeded in checking such activities?

According to the newspaper reports, the Chief Minister said that numerous letters and correspondence were handed over to him by Prof. Iqbal Narayan and these have been laid on the Table of the Rajasthan Assembly. What are the contents of those letters and correspondence? According to press reports, there are certain incriminating things, which the Chief Minister did not disclose or which has not been reported. What are the contents of that correspondence and why was the matter of the correspondence not disclosed to the whole country?

I would request the Minister to give specific replies to these questions.

SHRI K. C. PANT : I normally do not quote from newspapers, But I would



only refer to the Chief Minister's statement as it has appeared in the newspaper today because some one quoted from the newspaper and said that he has said such and such thing. My hon. friend said that the Chief Minister said something generally about CIA activities in universities, political parties and so on. But on the specific matter before us, the Chief Minister said—I am quoting from today's *Times of India*:

"Referring to charges of anti India activity against Mr. Richard N. Blue, an American, the Chief Minister said the research scholar had not indulged in any activity prejudicial to the interest of the nation during his stay here since September last."

This is the question before us and that is why I quoted from the Chief Minister's statement as it has appeared in the newspapers. I do not have the authoritative version and that is the only reason why I am quoting from the newspaper.

The other question he asked was, during the ten months' duration where was he allowed to go etc. These projects are carefully scrutinised. It is not for us, but it is for the Education Ministry to scrutinise the projects. It is for the educational experts and for the university to decide whether the research project is all right. These agencies look into this aspect of the matter and they satisfy themselves.

With regard to the general question he raised about foreign money, the House has discussed this matter on various occasions and expressed concern at the possibility of foreign money subverting our institutions and we are all united in our concern for keeping our institutions immune from such damage by any foreign money. On this question, the hon. member is aware that Government is bringing forward a Bill for the restriction on use of foreign money in India. This has been discussed in this House and the Prime Minister in her reply has said so. He referred to some letter or

correspondence which the Chief Minister had not disclosed, according to him. I do not know which letter or correspondence he is referring to. We are living in a free country. Unless there is reason for suspicion, one cannot go on chasing private persons' correspondence. There must be a sense of balance in this matter. (*Interruptions*)

MR. SPEAKER : Shri Amar Nath Chawla—not here.

12.40 hrs.

#### MOTION FOR ADJOURNMENT

ALLEGED DONATION MADE BY A  
CALCUTTA BUSINESS HOUSE TO  
THE RULING CONGRESS FOR  
ELECTION CAMPAIGN

SHRI P. K. DEO (Kalahandi) : In connection with this adjournment motion, we had thought of moving some other motion.

MR. SPEAKER : I received notice of these two adjournment motions this morning. But, before I saw this motion, the news already appeared in the papers. I saw in the papers that an adjournment motion is coming.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE (Gwalior) : We did not give it.

MR. SPEAKER : I do not know whether it is from your sources or their own sources.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : It is their own sources.

MR. SPEAKER : This matter is being raised in various forms in this House for the last two or three days. Today I think everybody is well prepared. I saw preparation going on both sides. The Speaker is also very well prepared. The point raised